

जैन धर्म की रूपरेखा

लेखक

पू आ देव विश्रम सूरेश्वरजी म

के

शिष्य

मुनि राजयश विजय

प्रकाशक

कस्तुरचंद झवेरी

श्री लक्ष्मिसूरेश्वरजी स्मारक संस्कृति केन्द्र,

प्रायना समाज,

यवई-२

मुद्रण स्थान —

श्री प्रिन्टिंग प्रेस

सडल एव्हेयु, चितार आली,

नागपूर-२

पान ४०६६०

हिंदी प्रथम संस्करण, जनवरी, १९७७

प्रति १० हजार

द्र य सहायक -

श्री सम्मेलन शिक्षरजी

महात्मा गांधी अनुमोदना समिति

कायाग

कुथुगाय जल मंदिर,

६२, महात्मा गांधी राड,

सीकगवा (A P)

निवेदन

लब्धिसूरीश्वरजी स्मारक सम्कार कद की ओर से प्रगटित इस पुस्तिका का जमाक जाठवां है ।

गुजराती में इस पुस्तिका की द्वितीय आवृत्ति प्रगट हो चुकी है । उपयोगिता का यह सबत है ।

हमन दूसरे संस्करण में इस पुस्तिका की ५००० प्रतियां गुजराती में प्रसिद्ध करवाई है ।

आज श्री सम्मेलन शिखरजी महातीथयात्रा अनुमोदना समिती की आरम्भ इस पुस्तिका की १० हजार प्रतियां का प्रसिद्ध करवाया का शुभ सफल हुआ है ।

हम इस ऐतिहासिक महायात्रा एवं अनुकी अनुमादना समिति के प्रति सफलता चाहत ह ।

ठागपुर निरामी रतिलाल गाह (थो प्रिंटिंग प्रेस) न अल्प समय एवं अल्प मूल्यमे इस काय मे योगदान दिया अनेके भी हम कृणी है । इस पुस्तक का मित्र नास्ति जम अन्पात्रधिमें नीध्राणिनीध्र

भाषांतर करने श्री शांतीलाल बार्सी वाला ने दिया है । आपकी ' जन रामायण ' में Ph D का पद प्राप्त हुआ है । और स्वयं बार्सी कॉलेज के प्राध्यापक है । आपकी सिद्धि एवम सहाय दानों की हम अनुमोदना करते है । हम आपसे आशा करते है कि आप ऐसी ही धर्मश्रद्धा व साथ गानन काय में सन्व अर्चित रहेंगे । अतः साक्षात् या परपरा से जिन महात्माआने हमे सहाय दी अन सत्रकी अनुमोदना करते है ।

प्रमाणक

कस्तुरचंद सवेरी

॥ जयउ सख्यण्णु सासनं ॥

। श्री समेतगिरस्य पाश्यनायाय नम ।

। श्री आत्मकमललब्धिसूरीश्वर सद्गुह्यो नम ।

मेरी बात

एक स्वप्न था, या कहीअे सासन के रक्षक आचार्यों की तीव्रतम इच्छा थी, या कहीअे कि सासन के दुलारी की महत्वाकांक्षा थी । इन सबका प्रत्यक्ष हुआ ९ नवम्बर १९७१ वा व ७ के दिन ।

सिक्द्रावाद से समेतगिरजी महातीथ का छ'री पालित सघ निवला । बल तक इस सघ की कल्पना भी मुदिकल था । आज वह आंखा से देखा हाल-निविवाद सत्य बन चका है ।

पू आचायदेव विजय लब्धिसूरीश्वरजी महाराजा जो मात्र जैन सप्ष्टति के ही नहीं अपितु भारतीय गीर्वाण गिरा एवं विचारधाराओं के अधिकृत महाविद्वान् थे । जन धर्म में आपने 'गुणानुराग' नामक सुवास का मन्त्र अधिक प्रसारित किया है । उन महात्मा के शिष्य प्रणिष्य पू आचायदेव विजय जयसूरीश्वरजी म सा , पू आचायदेव विजय विक्रमसूरीश्वरजी म सा , पू आचायदेव विजय नवीनसूरीश्वरजी म सा तथा

मापातर करके श्री गांतीलाल बार्गी वाला ने लिया है। आपका जन रामायण ' में Ph D का पद प्राप्त हुआ है। और स्वयं बार्गी कॉलेज ने प्राध्यापक है। आपकी विद्वि एवम सहाय दानों की हम अनुमोदना करते है। हम आपसे आशा करते है कि आप ऐसी ही धर्मधर्म के साथ दानों काय में सदैव अन्वित रहेंगे। अतः साक्षात् या परपरा से जिन महात्माओं ने हमें सहाय दी अन सबकी अनुमोदना करते है।

प्रकाशक

कस्तुरचंद शायरी

॥ जयदे सख्यन्तु सामग ॥

। श्री सनेनगिस्वरम्य पाग्वनायाय नम ।

। श्री आरमकमल्लम्घिमूरोवर सदगुदन्यो नम ।

मेरी बात

एक स्वप्न था, या बर्हीअे गामन के रमक आचार्यों की तीव्रतम इच्छा थी या बर्हीअे कि गामन के दुगारा की महत्वाकांक्षा थी । उन भुक्का प्रयत्न हुआ ९ नवम्बर १९३१ का व ७ के दिन ।

मिन्त्रावाद से सनेनगिस्वरजी महातीर्द का छ रों पाग्वि नध निवला । बर्हीअे त्रम नध की कल्पना भी मन्कि या । गज वह आंवा से दमा हाउ-निविवाद मुय बन चका है ।

पू आचार्यदेव विजय ल्घिमूरोवरजी मगराजा जा मात्र जैन सम्प्रति के श्री नहा अगिनु भारतीय गीवान गिरा एव विचारधाराया के अधिकृत मन्विद्वान थे । जैन धर्म में आपने "गुणानुगम" नामक मुवात का सबसे अगिन् प्रसारित विचा है । उन महत्मा के गिन्ध प्रगिन्ध पू आचार्यदेव विजय जयदेमूरोवरजी म सा पू आचार्यदेव विजय विजयमूरोवरजी म सा पू आचार्यदेव विजय नवेनमूरोवरजी म सा, तथा

भाषांतर करके श्री दातोलाल बार्सी वाहा ने दिया है । आपका
 जन रामायण ' में Ph D का पत्र प्राप्त हुआ है । और स्वयं
 बार्सी कालेज के प्राध्यापक है । आपकी सिद्धि एवम सहाय दोनों
 की हम अनुमोदना करते हैं । हम आपसे आशा करते हैं कि आप
 ऐसी ही धमध्दा व साथ शान्त कार्य में सदैव अंकित रहेंगे ।
 अतः साप्ता या परपरा से जिन महात्माआने हम सहाय दी
 अनु मंत्री अनुमोदना करते हैं ।

प्रकाशक

फस्तुरचद शिवेरी

॥ जयउ सख्खणु सासर्ण ॥

। श्री समेतनिखरस्य पान्थमायाय नम ।

। श्री आत्मकमल्लखिमूरीन्वर सदगुरुन्यो नम ।

मेरी बात

एक स्वप्न था, या कहिये गामन के रमक आचार्यों की तीव्रतम इच्छा थी या कहिये कि गामन के दुःखों की महत्वाकांक्षा थी । इन सबका प्रत्यक्ष हुआ ० नवम्बर १९७१ का व ७ के दिन ।

सिक्खावाद से समेतनिखरजी महानीय का छ'री पान्थि नष्ट निकला । बल्कि तब इस मध की कल्पना भी मुक्तिकर था । आज वह आँखा मे देखा हाल-निविवाद सत्य बन चका है ।

पू आचार्यदेव विजय लखिमूरीन्वरजी महाराजा जी मात्र जन मस्वृति के ही नहीं अपितु भावनीय गीवाण गिरा एक विचारधाराओं के अधिकृत मन्त्रविद्वान थे । जन धर्म में आपन "गुणानुराग" नामक सुवास की मर्ममे अधिक प्रसारित किया है । उन महात्मा के गिप्य प्रणिध्य पू आचार्यदेव विजय जयदमूरीन्वरजी म मा पू आचार्यदेव विजय विजयमूरीन्वरजी म मा पू आचार्यदेव विजय नवीनमूरीन्वरजी म मा, तथा

पू आचायक विजय मद्रकरमूरीवरजी म सा (प्रणिप्य) और निप्या माघी सर्वोदयाधी आदि निपिल विगार माघु साघी गण का निप्या में चल रही यह मघयात्रा बतमान जयत में जन धम की महानतम यात्रा है ।

इस महान यात्रा सिवद्रावाद से भाइवजी (भद्रावती) तक आ पटुची और तब तर भारत के जन मघा में नया उल्हाह पदा हो गया था । समस्त भारत के ५० म भी अधिक सघ व अधिकृत आमवान वही उपस्थित थे ।

सबका दिल इस मघयात्रा के प्रभाव से प्रवाहित हो गया था । सबका दिल में सागर व समान उमियाँ उछलती था । सबका दिल कहता था कि ऐसा सघयात्रा व मिलमिले में जन धम अब मस्त व्यसन व निषध का जारगार से उपदेग किया जाय ।

परिणामत उन उसाह उमियाँ ने अनुमोदना समिति का आयोजन हुआ । इस समिति का पूरा नाम 'धो समेतनिधरजी महानाथ मघयात्रा अनमादना समिति' है । लकिन मुविधा व लिय हम उहे 'अनमादना समिति' ही कहग । क्यकि समिति के मन्त्र्या अब कायकरो के सामन साम्य की आना गुम महाराज का आलापन व सामन का दिन है । उनकी दलि विगार है और पमार भा ।

निवेदन

“विष्णुसूरीश्वरजी स्मारक” मस्कार कद्व की ओर मे प्रगटिन इस पुस्तिका का त्रमांक आठवां है ।

गुजराती में इस “धु पुस्तिका की द्वितीय आवृत्ति प्रगट हा चुकी है । उपयागिता का यह सबत है ।

हमन दूसरे संस्करण में इस पुस्तिका की ५००० प्रतियां प्रसारना मे प्रसिद्ध करवाई ह ।

आज श्री सम्मेल शिखरजी महातीथयात्रा अनुमोदना समिती का आरम्भ इस पुस्तिका की १० हजार प्रतियां का प्रमिद वगन का शुभ संपन्न हुआ है ।

हम इस ऐतिहासिक मयायात्रा एवं अनुकी अनुमानता समिति व प्रति सफरता चाहत है ।

गागपुर निवासी रतिगाल गाह (श्री प्रिटिंग प्रस) न अप समय एवं अन्य मर्यस इस काय मे यागदान दिया अनुके भी हम ऋणी है । इस पुस्तक का सिर्फ दादिता जम अन्पात्रधिम गाघ्रानिगीध

पू आचार्यने विनाय भद्रकरसूरीश्वरजी म सा (प्रणिप्य) और
 निप्या साध्वी सर्वाध्याधी आदि निखिल विशाल साधु साध्वी गण
 की निधा में चल रही यह सधयात्रा वनमान जगत में जन धम
 की महानतम यात्रा है ।

इस महान यात्रा सिवशाबा से भाईजी (भद्रावती) तक
 आ पहुची और तब तक भारत व जन सघो में नया उत्साह पदा
 हा गया था । समस्त भारत के ५० स भी अधिक सघ के अधिवृत्त
 आगवान वही उपस्थित थे ।

सबका नित इस सधयात्रा के प्रभाव म प्रवाहित हा गया
 था । सबके दिल म सागर के समान उमियाँ उछलती था ।
 सबका नित कहता था कि एसी सधयात्रा व मिलसिले में
 जन धम एवं सन्त व्यसन व निषध का जारदार से उपने
 किया जाय ।

परिणामन - उन उत्साह उमियाँ म जनमाता समिति का
 आयोजन हुआ । इस समिति का पूरा नाम श्री सनेनिल्लरजी
 महानाथ सधयात्रा जनमादना समिति है । लखन सुविधा व
 लिय हम उह अनुमोदना समिति हा कहग । क्याकि समिति व
 सन्त्यों एवं कामकरा के सामन गाम्थ का आना गुन मन्तराज का
 आनेग एवं सामन का हित है । उनकी दन्ति विचार है और
 गभार भी ।

आज यह विनाश तौर से हमारे जनर भाईआ के लिये
 पू मुनिराज राजयगविजयजी ग आ गित किताब जन धम का
 परिचय का विद्वान प्रध्यापक डा गानिला बागसीबाग से किये
 गये भाषांतर की भेंट करने है ।

हमें आशा है आप पाठक वग एम वितात्र से जन धम क
 बार में अच्छी जानवारी मिली पावाग । और निष्पक्षपात दष्टि
 ग अध्ययन करके हमारे प्रयत्न का मफल कर एवं इस महान
 जन सघयात्रा की स्मति का आपसी आत्मा में चिरस्थायी बनायें ।

अनुमादना समिति
 प्रथमसुत्रक (Secretary)
 राजेन्द्र दलाल



“सफेद है वह दूध ही होता है या पीला है वह मोटा ही होता है” तो इस दुनिया में कोई विवाद ही खड़ा न होता ।

पर दुनिया में असली से नकली ही अधिक होने से हमेशा इस जावन व्यवहारों में सावधानी बरतनी पड़ती है ।

दिल्ले पर मेड इन यू एन ए लिखा हुआ होता है वह Ulhasnagar Sindhu Association इस नामक गली में लगी हुई फॅक्टरी में बना हुआ होता है ।

मनुष्य में भी वहाँ इसका अभाव है ? बेटा तोतली बोली बोलता है तो वह प्रिय लगता है पर जब वह जवान होकर अपनी पत्नी का गलाम बन जाता है तो महसूस होता है कि वह नकली ही है ।

उड़ी खगी से घोड़ पर बैठकर व्याह के आनंद में युवक मग्न-मस्त रहता है पर जब चार दिन में ही सलाक होने को उतराई हो जाता है तो वह क्या नकली युगल कहा है ।

इस प्रकार नकलीपन हर क्षेत्रों में दिन दूना रात चोगुना बढ़ रहा है । हम कहते हैं कि भाई नकला है इसलिए दुनिया में असली की महत्ता एवं मौलिकता है । चाहे कुछ भी कहा पर दुनिया में नकली का बोलबाला रहन वाला ही है । हाँ वह अक्सर रहगा भी । अतः आदमी को असली चीज पाने के लिए उसकी ठोक परख करना आवश्यक हो जाता है ।

धर्म के विषय में भी यह सच है । उसमें भी सच व स्थान पर झूठ तथा असली के स्थान पर नकली की महत्ता बढ़ चुकी है इसलिए यहाँ भी असली नकली की परीक्षा अनिवार्य ही है ।

धर्म का प्रधान अंग है ' भगवान् । ' भाई ! जिनको भगवान् कहने में औचित्य रहना है उनके लिए यह विचारणीय बात है कि भगवान् किस बहने ? अगर हम भगवान् को पुकारेंगे तो भगवान् थोड़ा ही सशक्त होकर प्रकट हो सकेगा ?

— किन्तो भी धर्म के भगवान् आज विद्यमान नहीं है इसलिए हमें सब धर्मग्रन्थों का अवलोकन कर के यह निणय करना होगा कि आखिर भगवान् का सच्चा प्रतिरूप या स्वरूप क्या है

इसका निणय एक महापुरुष ने इस प्रकार किया है— आज किता भी धर्म का कोई भी भगवान् हमारे बीच उपस्थित नहीं है

पर हमें सब धम पुस्तको को पढ़ कर वास्तविक भगवान कहलाने लायक कौन है इसका निणय करना होगा ।

यह तो मानना ही पड़ेगा जो जसा होगा उमका वसा ही चित्रण उनके धमग्रन्थों में किया गया होगा ।

सच है साहित्य दण है । दण के आगे जा जसा है वसा ही दिखाई देगा । काला आदमी उजला नहीं दिखेगा और न उजला काला ।

भगवान का दणन पढ़कर हमें इस निणय पर आना होगा कि जो राग द्वेष से—अहंकार, ममत्व से, तेर मेरे स, भले बुरे से, 'पर' रहा है वही सच्चा भगवान कहलाना है ।

हम जब किसी का पापी अधर्मी नीच अधम कहते हैं तो यह सब उमका आत्मा में रहे हुए राग द्वेष के कारण से ही न ।

बान बात में क्रुद्ध होन वाला दुनिया में अपने ही को सब बुद्ध मानने वाला स्वाधपूति के लिए भूरे के विवेक से भ्रष्ट को पापी का ही मजा दी जा सकती है और यह दशा राग द्वेष एवं अज्ञान जहा होना है वहा ही दखन में आता है ।

'राग' यान मेरापन । यह स्त्री भरी यह धन मेरा यह बटुव मेरा यह धारीर मेरा यह भगत मरा यह खास सधव मेरा, आदि सब, 'राग' के हा तरीके हैं । यह लाभ ही है ।

इस राग में ही सब पापों का उद्भव है ना ? मैं ही सब कुछ हूँ । मैं ही पूजनीय हूँ इसलिए करने मुझ पूजना चाहिए । पृथ्वीनल पर मशमा कोई भी नहीं है । मेरे इस जह में जो बाधक होगा उसको मैं भीत के घाट उतारूंगा । पाप देकर पाप में साक बना दूंगा । यह सब द्वेष का ही रूप है ।

इस प्रकार का राग द्वेष जब तक विद्यमान है तब तक मन्वा ज्ञान कामों दूर रहता है तो फिर सम्पूर्ण दुनिया का ज्ञान किस प्रकार प्राप्त हो सकेगा ?

अन्कार और ममत्व का अज्ञानिया में हो रह सकता है । इस अज्ञान में ही तो जगत दुःसा है । जब हमारी ही माटर हमारा नाश करेगी । जब अपना ही पत्नी अपना गला घोट लेगी । हर रोज दो टाईम नहीं पर बार-बार ज्ञान का मागन वाला अपने मुन्तर तन्दुरस्त गरीर ही जब बाधियों में जजर हो जायगा हमका भी हमें ज्ञान महां है । यह क्या धार अज्ञान ।

जिनका चरित्र पन्वर हमें प्रतीति हो कि यहाँ अज्ञान का एक अंग भी उपस्थित नहीं - राग द्वेष का अंग भी विद्यमान नहीं है ना समझ लेना कि ज्ञाना मयकी आत्मा से वे आत्मा उच्च तब भिन्न आत्मा है जिस हम परम-आत्मा या न परमात्मा कहते हैं ।

यह परमात्मा जो बड़ी ऊँची आत्मा होती है, वह परमात्मा
एक भगवान् कहलाती है ।

इन परमात्माओं का चरित्र ऐसा प्रभाव पूर्ण होता है कि
जिस पटकर तथा सुनकर मानव परम गति का अनुभव करता है,
वैर विराध का जहर नष्ट होकर प्राणि मात्र को अपना परम
मित्र मानने लगता है ।

कारण ?

इन परमात्माओं का जीवन तप, त्याग, कृष्णा और दया से
ऐसा भरा पूरा होता है कि अक्सर उस पर चोछावर हो जाता है ।

फिर यह समभाव में मस्त आत्मा (परमात्मा) प्रशंसा से
सुष्ट या निदास कष्ट से बन सकती है ?

किसा को मानव से पशु या पंगु से मानव बनानेवाला भी
भगवान् कहाने योग्य नहीं हो सकता ।

भगवान् तो निन्दक तथा पूजक, कष्टदाता या मेवाकर्ता
ज्ञान पर समभाव रखता है । वह न तो पूज्य पर खूब होता है
न निन्दक पर । फिर वह किसी को क्षाप, देकर क्यों कर
जलायेगा ? या मौत के घाट क्यों कर उतारेगा ?

किस प्रकार भगवान् के लिए किसी को मारने की आव-
श्यकता ही उत्पन्न नहीं होती । क्योंकि उनमें रागद्वेष, अज्ञानादि

दोषों का सम्पूर्ण अभाव होना है । इस प्रकार के दोष रूपी गन्धुओं को जिन्होंने मार लिया है वे भगवान् अरिहन्त कहलाते हैं । क्षरि-रामद्वय अज्ञानादि गन्धुओं का नाश किया है वे अरिहन्त ही भगवान् कहलाते हैं ।

रागद्वेष अज्ञान आदि सबका सम्पूर्ण नाश कर वे विजिता बनता है इसलिए उन्हें हम 'जिन' या 'जिनेश्वर' भी कहते हैं ।

ऐसे सब तोड़कर और जिनेश्वरों के नाम एवं जीवन धर्माचारों में भिन्नता हो सकती है पर तप त्याग भक्ति से रागद्वेष तथा अज्ञान आदि पर विजय पान में सब समान ही होते हैं ।

ऐसे परमात्माओं ने न किसी का कभी शाप दिया है न किसी को भक्ति से दूर होकर कोई बरगान ।

ये परमात्मा तो आत्मा से परमात्मा बन जाता है वह है इसकी रूपरेखा बनाना है । उस मांग के प्रत्येक एवं एक बनते हैं ।

ऐसे भगवान् जहाँ जहाँ विचरते हैं वहाँ वहाँ अपने प्रभाव से सुख शान्ति ही प्रदान करते हैं ।

उनके आगे सिद्ध जस हिंस्र प्राणी अपना करता भूल जाते हैं और गाय जमा डरपाव प्राणी भी निभय बन जाता है । इस प्रकार उनके विविध अद्भुत प्रभाव से दुनिया प्रभावित होता है ।

ऐसे अरिहत्त जब साक्षात् विचरते होंगे तब क्या होता होगा यह तो उनकी साक्षात् उपस्थिति से ही हम समझ पा सकते हैं ।

पर उनका जीवन कितना ऊँचा होया यह तो उनकी मूर्ति भी कह देनी है ।

क्या आपने कभी अरिहत्त भगवान की मूर्ति को गौर से देखा है ? जैन मंदिरों में वे विराजमान होती हैं अवश्यमय उनका दर्शन कीजिए ।

इस मूर्ति को गौर से देखने पर आपको ज्ञात होगा कि भगवान परमात्मा का कितना विरूपण स्वरूप होता है ।

कारण ?

उस परमात्मा के हाथों पैरों में शस्त्र नहीं दिखेगा । शस्त्र धारक भगवान कबे कहला पायेंगे ? शस्त्र तो शत्रु के डर से धारण किया जाता है । या जा किसी से डरता हो तथा जिसका कोई शत्रु विद्यमान हो उसे धारण करना पड़े ।

परमात्मा तो शस्त्र हाथ में ग्रहण भी नहीं करते हैं । सच कहा शस्त्र देखकर मन में कैसी भावना उत्पन्न होता है ?

दूसरी विनोदता है पर्याप्तता का । अरिहंत की मूर्ति पर्याप्तता में ही विरोजमान रहती है । उनके नीचे हाथों चौड़ा भूपर्यं य बस असा कोई वाहन नहीं होता है । पर क न न -

वाहन तो मुसाफरी के लिए आवश्यक है । परमात्मा के उसकी कोई आवश्यकता नहीं होती, व ता मान में पहुँच चुके । अब उन्हें सवारी किस लिए ? - - - - -

परमात्मा को किसी पर बैठने का नहीं हाता-बल तो रहा । अपने उपदेशों का साग-दशान करके भोगपुरा पहुँचाना चाहते हैं ।

जिम प्रकार परमात्मा भगवान् के हाथ में धार-नहा हाना उसी प्रकार जपमाला भी नहीं हाती । कारण अब तो मान प्राप्त का माग है । भगवान् तो भाक्ष प्राप्त कर सके है । वे पूज्य बन सके है और उनके लिए कोई अद्य-पूजनीय नहा रहा है । विमका मोक्ष-पाना शेष हो वे भगवान् के से कहलाए जायत ?

परमात्मा की मूर्ति के साथ स्त्री की मूर्ति रह हा नहीं सकती ।

कदा परमात्मा को भी पत्नी होती है ? - - -

अगर भगवान् को पत्नी हाती तो व बीतरागा नहा अपितु अपनी ही पत्नी के भगवान् हामे ? नहीं नहा । व ता जगत मात्र के,

प्राणिमयी के-हितकर्ता एव तीनों जगत-के-भगवान है इसलिए उनकी मूर्ति के साथ स्त्री हो ही नहीं सकती ।

इसके उपेरात अरिहत की मूर्ति आखें, भान नाक तथा मुखवृत्ति के दर्जन परम-आनन्द दायक होते है ।

कारण ?

जिनेश्वर के नेत्रों में किसी के-प्रति क्राध का छय भी नहीं होता ।

उनकी मूर्ति के दर्शन पाने ही हमारे हृदय में प्रतीति होती है कि ये आत्मा नहीं ।

पर-परमोत्तम या भगवान है ।

ऐसे अरिहत तीव्रकर जिनेश्वर देव केवल जैनों के ही 'देवता' जना के हो भगवान है यह मानना गलत है । पर ये भीतरागी दव उही के भगवान है जिन्हें इस प्रकार के राग द्वेष से रहित वातरागी भगवान ही पूजनीय लगते है । जिसे इस प्रकार के भीतरागी भगवान ही श्रेष्ठ है वे ही सच्चे जन है ।

“जन शब्द का अर्थ है, - जिनके अनुयायी - । ‘जिन’ में राग द्वेष रहित भीतराग में-ही श्रद्धा तथा विश्वास रखनेवाला ही सच्चा जन है ।

इसी महत्ता के कारण हाता एव कराओं अजन गुञ्जा महानुभावों ने जन धर्म की शरण ली। वीतराग त्रिनन्दर है को अपने सख्य देव मानकर उनके चरणों में स्वयं को समर्पित किया। जिवन इतना ही मही उनका गण संकीर्तन किया है अपितु अन्य धर्म पुस्तकों में भी योग बाणिज्य वदित धर्म का सभी का समान आन्तरणीय धर्म है। उसके रसमिमान बंसी मुन्दर एवं पक्षपात रहित बात बही है -

“माहं रामो न मे बाधन्ता विषयेषु न च मे मन ।

नास्तिमायानुमिच्छामि आत्मयवेव जिनो यथा ॥”

ये राम नहीं हैं। न तो विषयों में मेरा मन है न मेरी इच्छा दोष है। पर मैं 'जिन' जन देव के समान आत्मा में 'नान्ति पान' की इच्छा करता हूँ।

जिनेन्दर ज्ञान परमपात आत्म तरव इसलिय उस पान की अमिलाया ही सच्ची इच्छा है।

पुरानों एवं वेदों में भी जन तीर्थकर का सम्बोधन कर रहे हुए मत्र उपलब्ध है। और हमने आगे बढ़कर यह बात भी है कि भगवान् श्रवण देव जा जनों के प्रथम तीर्थकर है उन्हें मोक्ष भाग के प्रस्थापक भी कहा है। श्रीमद् भागवत में तो उन्हें भगवान्

विष्णु के अवतार के रूप में आदरणीय माना है और वह भी कितनी सुंदर भाषा में ?—

हमेशा विषय भोग की अभिलाषा से अपने वास्तविक श्रवणाण से वंचित आत्माओं का करुणापूर्ण हृदय से निमग्न तथा आत्मश्रवणाणकारी उपदेश देकर हमारा आत्मानुभव हो ऐसी आत्म-रूप की प्राप्ति में सर्व इच्छाओं से मुक्त बने हुए भगवान् ऋषभदेव को नमस्कार हो (अध्याय १८, श्लोक १)

यह ऋषभदेव का ध्यान तीर्थकरी की महानता एवं सत्य स्वरूप का प्रकट करने में समर्थ है ।

राजपि भतहरि के वराग्य से भारत में कौन बेखबर है ? उसने ना मच्च साध्य के रूप में भगवान् जिनेश्वर देवों की ही स्तुति की है ।

एकै रागियु राजते प्रियतमादेहार्धधारी हरो
मोरागेषु जिनो विमुक्त सलना सगो न यस्मात् पर ।
दुपार स्मरवाणपन्नगविषय्यासक्तमुखो जन ।
शेषकामविह्वितो हि विषयान भोक्तु न भोक्तु क्षम ॥

“एक आर रागिओ प्रियतमा के अर्धांग में विभूषित हर है और दूसरा आर विरागीओ में स्त्री के संग से पर जिनदेव शोभते

परवार छाड़कर निकल हुए सख्त साधु कभी अपने मठ,
मन्दिर मस्जिद या स्थान नहीं बचकात ।

सबक द्वार खोल लिए मंज हुए होत हैं । "३१"

इसा लिए जैन साधु के लिए सबन पहली गत है कि—
यह राजा हो या महाराजा

पर

उसका पर बार तथा स्वजनों का छाड़कर हा आना चाहिए ।

घनिष्ठ हो या गरीब उन्हें नियत निय हुए स्वैत वस्त्रों का ही
धारण करना चाहिए ।

बहु वेग ही उभा है कि जिसमें स साधता क लगन हो हा
पाते हैं ।

युद्ध के मदान पर— मर्घ का ध्वज सफर ही हाता है ना ?

इन साधना क वग में एसी साधना है कि जिमे स्वकार
किसी क मन म लाभ र्विया या लूट की भावना ही जागृत
न हो सर ।

कया साध क पास आभयण हु ?

मह्यवान रग विरग बस ह ?

साध क लिए इत्र लेन या कूल ह ?

नहीं ।

साधु के लिए उनके गुण ही शृंगार हैं, मीठी मधुर बानी ही उसका भूषण है। अपने उच्च चारित्र्य-नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की सुवास ही उसका लिए तेल एवं द्रव्य है।

अगर साधु भा वस्त्र आभूषणों तथा प्रसाधनों के पीछे पड़े रहे तो दुनिया को सादगी का पाठ कैसे पढ़ा सकेगा ?

अगर वह अपने शरीर के साज शृंगार में पड़े रहे तो दुनिया के प्राणी मात्र का मेवा टहल को पाठ कैसे पढ़ा सकेगा ?

प्राणी मात्र के आत्मगुणों का विकास कैसे कर सकेगा ?

इसीलिये साधु का वेग भादगी में परिपूर्ण होता है।

वह वस्त्र मित्र उज्जरक्षण के हेतु ही होता है।

वस्त्र शरीर की गाम्भा वृद्धि के लिए नहीं अपितु शरीर की रक्षा के हेतु धारण किया जाता है।

रंग विरंगे की मृती धूल पहनता है वह साधु, जन साधु नहीं कहला सकेगा।

जिसे अपना घर बार छोड़ना है।

लाखा की जायदाद तजनी है।

उसके लिये पना भी अस्पृश्य भवस्तु है।

उसका स्पर्श भा साधु के लिए हेय है।

तीस उपवास भी करे। और ६० उपवास भी, महीना तन ही नहीं बरसों तक रुखा सूखा खाय। किन्तु तैकें अमुक वस्तु में अधिक वस्तु नहीं खाने की प्रतिज्ञा करे।

भारत के इस ओर से उस ओर तब यानि एमें किनारे से दूसरे किनारे तक १०० २०० मील के फासले में कोई न कोई जन माधु आपको मिलेगा ही। जन माधु जब भा वही जात है मतलब विहार करते ह, तो पट्टा ही भाया करते ह।

वह भी नगे पैर मुवहे हाथी घामे
शर्दी हो या गर्मी, वाटे हू या चकर
वह नगे पर ही विचरता ह।

क्या अपनी चमड़ी कुछ कम ह जा उसपर पग की चमड़ी का सोलें छेड़ाया जाये ?

कसा गुजब का स्वतंत्र जीवन है यह !

बीमार हा तो वहीं रख जाया। कुछ कम चले-आहिस्ता भुले चले पर चलता हा रहे।

इस प्रकार का बप्पू नहीं तो साधुता क्या ?

शरीर तो पंच भूतों का घूतला है उसकी सार सम्भाल से तो छोटे बड़े सब जीवों की रक्षा ही बेहतर।

नये वीर वह इसलिए बलवान् है कि छोटे जीव भी उसके
वीरों के भीचे न रोता जाय ।

बाया कसी जय इस प्रकार साधु हर रोज नामोत्सर्ग में
प्रेमर रहता है चाहे शरीर थक भी क्यों न जाय ? उसकी प्रति-
क्रमणादि की चिन्ता भी सड़े होकर ही की जाती है ।

और

लेख समय घमोरेश या शास्त्रपठन में व्यतीत हो जाता है ।
साधु की व्यय भी बातों में बँधाने के लिए समय कहाँ है ?

अगर वह व्यय बातों में समय व्यतीत करे तो अपना घर
छोड़कर भी अनेक घर बनाने वाला ही बनेगा ।

इस दुनिया की भौतिक और विलासी वस्तुओं से दूर रहने के
निमित्त के कारण ही जैन साधु हजारों वर्षों से विरासत में
प्राप्त पाग की आजगूँ रखा कर सका है । उसकी वृद्धि कर सका
है । उसका विस्तार कर सका है ।

जैन साधु की संपत्ति है, उसका ज्ञान । आत्मा को लाभ
पहुँचाने वाली ज्ञान का एक अनर पाने के लिए साधु लालायित
हो उठता है । जमीन जोने बिना फसल देने योग्य नहीं बनती
फिर देह कैसे बिना ज्ञान कैसे श्रेष्ठ होगा ? इसलिए साधु दाढ़ी

मुख और सिर के बालों को हाथसे उसाड़त है । हर रोज दाढ़ा मूँछ बनाने में उसको रस कहीं और समय भी कहीं है ? ॥

साधु का—सच्चे साधु का रास्ता ही निराला है । उसे न हजाम की आवश्यकता है न पसे की, चार छह मास हाने पर वह हाथों से बालों को खींचकर नष्ट कर देता है । यह श्रिया तो सलून में आपका नबर लगे उससे पहले ही पूण हो जाती ह ।

मन का दुबल साधु कहता ह यह ता जुल्म ह सबल साधु कहता ह कि यह तो साधुता की मौज ह ।

शरीर को कष्ट न दे तो वह सेठ ही बन जायेगा न ।

वय में दो चार बार इस प्रकार हाथ चलाने से शरीर समझता ह कि उसके अंदर आत्मा जागत है अगर ठीक तरह से काम नहीं किया तो खाना पीना देनाही वह बंद कर दगी ।

राजा को जीवन के लिये राजमहल पर बच्चा करना पडता है और देश राजमहल के लिये जीतना पडता है ।

आत्मा ही राजा ह ।

मन उसका राजमहल है ।

और शरीर उसका देश ह ।

ऐसे कितने ही नियमों से शोभने वाला साधु है। वह किसी का
बोझ नहीं बनता, पर खुनेकों का बोझ झुलका कर देता है।

अपना और अर्थों का आत्मकल्याण करे वह साधु

ऐसे गुरु की प्राप्ति हमें अधिकार से प्रकाश में ले जाए तो
आश्चर्य क्या ?

नहीं तो

घोर अंधेरे में हम भटकते ही रहें हों !

शरीर नहीं जाना जाता तब तक मम पर विजय नहीं प्राप्त होती परमात्म दान नहीं प्राप्त होती । क. १८ । १००० । ५५५५५

बस - १२५४

इस प्रकार सन बचन, तारा की साधना है वह साधु । मेरे
तेरे का भेद नष्ट कर है वह साधु । १००१३ । १००१४ । ५

एसे सच्चे साथ की हुई प्रवृत्ति से अहिंसा एवं सहयोग टंगती
ही रहती है । -

उसकी हर बात में प्राणी मात्र की प्रीति एवं हित की भावना की झलक है।

सत्य मोक्ष का तो हमें का नियम । साधु को बिना पूछे
निकल भी पहुँचा नहीं है । मादिक को आज्ञा के बिना कह ले
नहा मज्जा चाह वह दान माफ करने की काही है । या जीवन-
मरण के समय की पाना की अन्तिम पट हो ।

सार्थ तो अहोमय का पालन ही है।

वह याने आत्मा-मत्स्य-आत्मा-परमात्मा ही है। उससे ही उसका प्रेम होता है। फिर उनको पत्नी 'वैभ' बनाने हो ? मन-वचन-काया से वह विलास को तजना है। स्त्री-क स्पर्श से भी वह कोसों दूर रहना है।

ऐसे कितने ही नियमों से शोभने वाला साधु है । वह किसी का बोझ नहीं बनता, पर अनेकों का बोझ हलका कर देता है ।

अपना और अगो का आत्मकल्याण करे वह साधु

ऐसे गुरु की प्राप्ति हमें अघकार से प्रकाश में ले जाए तो आश्चर्य क्या ?

नहा तो

घोर अघरे में हम भटकते ही रह जाते ।

धर्म के इतिहास में, ऐसी, अनेक बातों की, नाथ है । अथ धर्म क लाए पापी है इसलिए चाकी हत्या करो, धर्म होगा ।

इतिहास में यह धर्माघता कहलाती है । पर इस मूलतापूर्ण ज्ञान का धर्माघता नहीं अपितु मूर्खाघता या मोहाघता पहनी जानिये ।

इसे धर्माघता कहने से धर्म का, मूल्य घटता है पर मोहाघता कहने से अधिष्ठा का मूल्य बढ़ता है । सच्चा धर्म इस हिंसा को कभी बरदास्त नहीं करेगा । धर्म किसी से करने से नहीं, हो जाता, धर्म तो यकिन एवं आत्मा से स्वयं कुरने से ही होता है ।

श्वेनिक महाराजा क समय में कालसीनरिक कसार्ह था । प्ररोज ५०० भनों का हत्या करता था । राजाने इस हिंसा को बन्द करने का संकल्प किया । कालसीनरिक को उमने कूए में रखा । कालसीनरिक न मिट्टा क ५०० भंसे पुनाय और उनकी हत्याका आनंद लिया और राजा श्वेनिक न हिंसा बंद करने का आनंद तो लिया ।

पर उन्होंने अन्त में देखा कि हिंसा हृदय में छपी हुई रह गई है । उसे नष्ट करने के लिये दण्ड की नहीं पाप क निरस्कार का ही पाप के निरस्कार की तथा पापी क प्रति करुणा की आवश्यकता होती है ।

अपने करने में धर्म कभी नहीं होता। 'धर्म' तो अपने स्वयं के करने से होता है। इसलिए धर्म के 'नाम' पर अपने धर्म के अपने से विरुद्ध धर्म के लोग के लिए अधिकारों की ऐव तिरस्कार ही भावना पैदा करामे या उनकी हत्या करने को जा कहे वह 'धर्म' ही नहीं है। सच्चा धर्म तो सब प्राणियों के लिए 'सच्चा

दया, - १४४६ १० १०० १११ १२२ १३३ १४४

वर्षा - वर्षा १९५५ । ३०, १९५५
अथ अद्वैत सिद्धांत ह १९५५ की १९५५

इसलिए धम का प्रथम लक्षण अहिंसा है। सब लोगो को जीवन का एक हक है, बलवानों को जीने का हक है, और निर्बलों को जीने का अधिकार ही नहीं है यह मान्यता ही सब से बड़ा अग्रस है।

क्या मानव मनुष्य से बना मनुष्य ने शक्तिमान है इसलिये उसको सब की मारो का अधिकार है ? नहीं इसीलिए सत्त्व को बचाने का ही उसका जन्म है । सब को बचाने में ही उसके शक्ति की बसाटी है ।

एक चित्रक ने कहा है— १५ । । । १५

'हिंसा यन् धर्मः' स्यात् अधर्मः तदा को भवेत् ?
अगर दक्खिनालीया निबल किसी भी प्राणी की हिंसा को धर्म
कहा जाय तो अधम किम कहेंग ?

सहचयपालन, सदाचार मरुती के लिए माता के समान मान ।

परधन-संपत्ति को मिट्टी के समान ।

- १-आत्मा के प्रतिमा दुनिया में, कोई भी चीज, अपनी नहीं है इस प्रतिमा की बुद्धि करनेवाला निष्परिग्रह-य सदा अहिंसा के ही अंगोपांग है ।

क्रोध मान माया लाभ भा हिंसा ह । उससे अंग किसी की हिंसा न भी हाती हा फिर भी स्वयं की - आत्मा की हिंसा तो होती ही है ।

अपनी आत्मा की हिंसा यानि आत्मा और परमात्मा के बीच लोहे की अटूट का निर्माण है ।

इसलिए क्रोध, मान भीया लोभ आदि अघम है पाप है इस प्रकार समझा लेना अहिंसामय धर्म ही सत्यधर्म हो मवेगा ।

यह सत्यधर्म की प्रकृति लोभ भी मानी मायावी मा लोभी नहीं कर सकेगा ।

इसलिए बीतक्रीड़ा 'बीतमाना' बीतवादी और बीतलोभी अपना बीतराग जिनेश्वर तेव ही मत्प्राप्त जना सकते हैं ।

इस प्रकार के किसी भी बीतरागी न विमा भी स्थान पर, किसी भी काल में कथन किया हुआ धर्म ही सत्यधर्म है ।



स्याद्वाद-अनेकांत

सच्चे एवं महान धर्मकी परीक्षा अनुयायियों की मर्यादे बल पर नहीं अपितु उसने धित्तन एवं विचार बल पर तथा उदारता पर निर्भर है ।

विचार की उत्तरता में जनधर्म विश्व में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है ।

गुजरात के आनन्दगिर^१ ध्रुवजी से लेकर चुस्त रामानुज^२ संप्रदाय के गुरुआ तक सबने जो के स्याद्वाद की प्रशंसा की है । गांधीजी एवं बर्नार्ड शॉ^३ जैसे विचक्षण विचारक भी इन पर मर्याद

- १ स्याद्वाद हमारे सामन समन्वय का दृष्टि खड़ी करता है ।
- २ स्याद्वाद जनधर्म का अजेय किला है । वादी प्रतिवादी के मायामय गोले इसमें प्रविष्ट नहीं हो सके ।
- ३ जनधर्म में मिद्वान्त मुझे अतिप्रिय है । जगर पुनर्जन्म, सत्य हो तो मैं चाहता हूँ की मृत्यु के बाद मरने वाला जन मुटु में रहे ।

वन हैं। टागोर और राजेन्द्रबाबू जग श्रेष्ठ पुरुषों ने विश्वशांति के लिए जन धर्म का वैचारिक स्वरूप बनाया है।

इस विचार उदारता का नाम है अन्यायवाद — न्यायवाद — अविनाशवाद।

अन्यायवाद के तात्त्विक विचारों की महत्ता का विचार छाँटकर हम मोक्ष की यह उमक पाएँगे। पर क्या असर करता है निम्नसे अन्यायवाद का स्वरूप स्पष्ट होगा।

बहुत से धर्म के लोगो की मान्यता है कि 'भक्ति से ही आत्मा का ब्रह्मण होता है' अथवा जनको की श्रद्धा है कि समाज सेवा ही धर्म है। कुछ तो कहते हैं कि तप ही मोक्ष है।

तब जनधर्म का कथन है कि इसमें से कोई भी मत एक धर्म नहीं है। नतना हा है। कि वे परस्पर की बात मानें।

पर भक्तिवादी कहें कि न्याय ही धर्म नहीं होगा तप ही अधर्म ही है।

तप का समर्थन कहना है कि नही सदा में क्या रहता है तप ही सच्चा धर्म कहा जाता है। ऐसा कहता तोना ही गठ होने

अन्यायवाद कहना नही भाई तप भी धर्म है और सेवा भी धर्म है। मनुष्य का ग्रा भी धर्म है और भक्ति भी धर्म है।

और और

जनों व जीवन में हम इस तत्त्वज्ञान की झाकी पाने हैं ।

पोषण व दिनों में हम देख पाते हैं कि एक ओर वे तप करते हैं । वह तप भी क्या ? छाटा बालक भी उपवास करता है । २४ घंटे कुछ खाना पीना नहीं है । ऐसा नहीं कि उपवास कर जोर फटाहार कर । उपवास यान उपवास । ऐसा भी नहीं कि सुबह १ लाख और रातको लाख ।

इस प्रकार एक ओर वह तप को धर्म समझता है तो माथ ही माथ अपन हाथ ने दात पुण्य भी करता है । गरीबों अनार्यों का अन्नदान भी करता है । गौशालाया का भी पोषण करता है । यह जीता जागता मूर्तिमान अनेकतवाद नहीं तो और क्या है ?

तप माने त्यागपान त्याग धर्म है पर माथ ही धुंधलों-पीसीतों का त्यागपान क्या उनकी सेवा दहल करना भी धर्म है । नहीं तो जो पाप से बचन के लिए धर्म व नामसे खाता नहीं वह जब दूसरो के लालच है जो विराध सा लगता है न ?

पर नहीं विचार की उदारता जिसके पास है वह समझ पाता है कि तप भी धर्म है अधार्मिकों को बिलाना भी धर्म है ।

जैनियों के सपरमाग से प्रभावित अनन्क दंग गनाआ ने कहा है कि — अगर अनाज की कमी दूर करनी है तो जनधर्म का पालन करो । उनका तप यान तप ।

पर

अपनी बाया को काट देना इसका अर्थ यह नहीं कि दूसरा को काट देने में पाप नहीं है । सुद लो ३०-४०-५० दिन तक उपवास करना है पर अर्थ किसी जीव को जरा भी दुःख न पहुँचे इसके लिए सावधानी बरतता है ।

उसी प्रकार जन ज्ञान भण्डार के ग्रंथों के लिए एक अत्याचार हुआ है कि ग्रंथों को जलाकर उत्पन्न की हुई आगपर हजार सैनिकों का गरम स्नान जल छ छ मास तक उबलता रहा है फिर भी अनोखे रूप से जिस ममता से जन ज्ञान भण्डारा में साधनों के पुस्तकों की रक्षा हुई है वही जनिया व स्याद्वाद का जात आगता दृष्टान्त है ।

‘ कितना ही जनेतर साहित्य विपुल जन भण्डारा में है रक्षित रहा था ।

(के का शास्त्री)

जन धर्मी छाटा बाग़ भी अगर अपने कुठ व सस्वार : युक्त हो तो अर्थ पुस्तकों के उपर तो क्या पर बोरे कागज प ना पर रखते हिचकिचायगा । यह तो उसे ज्ञान का अगाधन

कहगा। उस ज्ञान के प्रति श्रद्धा के कारण ही जैन धर्म ग्रंथों में अथ धर्म के मत कितने अंशों में और किस प्रकार सत्य है इसका विस्तृत वर्णन उपलब्ध होता है।

जन भंडार में कुरान, त्रिपिटक, बायबल वेद और पुराण जैन आगमा के समान ही हिफाजत से रक्षित देखेंगे। इतना ही नहीं बल्कि यह भी देखेंगे कि जन धर्म के खंडन करनेवाले ग्रंथों की भी रक्षा की गई है जिन्हें उस ग्रंथको पूज्य माननेवाले अनुयायी भी न बचा सके। इस स्याद्वाद के कारण ही जैन तत्त्वखंडन करनेवाले ग्रंथों की जनाचायाने निराकार और प्रामाणिक टीकाएँ रची हैं। इतना ही नहीं पर महाभारत और पुराण ग्रंथों के पाठ सदा के रूप में उचित स्थान पर आधार के रूप में रखे हैं।

इसका यह कारण है कि जैनशास्त्र किसी वस्तुको एक ही प्रकार की है ऐसा नहीं मानता एकांत आग्रह को यह मिथ्या समझता है। वस्तु इस अपेक्षा से ऐसी है और अथ अपेक्षा से ऐसी भी है। इस प्रकार का स्याद्वाद ही सच है। जैनो के नदीसूत्र में एक ऐसी उदारतापूर्ण बात कही गई है जो अथ शास्त्रों में कहीं प्राप्त नहीं होती है। उसमें कहा है कि

१ बुद्ध धर्म का तत्त्वसंग्रह ग्रंथ भारत भर में नाश हो गया था पर उसकी एक कापी जैन ज्ञानभंडार में उपलब्ध हुई है। ॥

‘महामारत पुराणाणि’ अथ सब धर्माणां ज्ञा उचिन ढग से बड़े तथा सही अपेक्षा समझ ता वे झूठ एवं मिथ्या नहीं है। उससे विपरीत अगर जनागम प्रयोगोंका उचिन रूप में समझ न कर तो वे भी मिथ्याभूत बनते हैं।

निष्पत्ति के रूप में हम कहेंगे कि जन धर्म में यह मतलब रखा है कि

दुनिया में कोई भी बात झूठी नहीं है। मरणा नमन की सच्ची दृष्टि हानी चाहिए वह सही न हो। दृष्टि ही अगर झूठी हो तो सृष्टि की कोई भी चीज सच्चा नहीं है।

जना के मन्दिर पर तथा जन धर्मानुयायियों पर कलत्र का कपा देने वाले भीषण अत्याचार हुए हैं। धर्मपरिवर्तन करवाने के बहाने दो हजार मुनि काट दिये गये हैं। फिर भी जना ने कभी किसी मूर्ति-मन्दिर या मस्जिद नहीं ताड़ा है इतना ही नहीं पर धर्म के प्रत्येक शास्त्र में दान की गया बहना रखा है।

जन वार जगद्गुरु न बनवायी हुई मस्जिद गमथाना है कि अपने धर्म की महानता अर्थों पर जाक्रमण करके नहीं पर अपन समर्थन तथा बताया हुई उदारता से ही दिग्गति हानी है।

‘जनधर्म आरम्भसमर्थन इच्छता’ है अक्रमण नहीं कभी नकली चीज को नकलीपन की प्रतीति के लिए भी उसकी प्रतिष्ठा करनी

पता है। वर स बैर नहा उपगत होना पर वर की अग्नि प्रम क ज स पुगती है।

यहा है अनकानवाद और यही है रान्ची मानसिक अहिंसा। 'पापी और पाप नाना नि-कु भिन्न है। पापी और पाप दाना एक ही है।

य दानो परस्पर विराधी बाने बिना स्याद्वाद क समन में नहा आ सकती। जब कोई पापी सामन आता है तब देखना चाहिए पापी और पाप भिन्न है इसलिए पापी का मार्ग नें क्या? पर ज हमसे कोई पाप का आचरण हाता है तब राचना कि में जोर पाप भिन्न नहा— एक ही है। इसलिए जितना में सहगा उत्तम मरा पाप का बोध घटगा। वही यह चापतूसी नही चगेगी कि म क्या करू? म (आमा) और पाप भिन्न है। कम पाप कराते ह इसलिए मुनसे भूज हाती है। यह कहना स्याद्वाद नही उसकी विडवना मात्र है।

इया कारण जन मुनिया ने भारतभर में मुसलमाना स लेकर हिंदु ब्राह्मण और जैन राजाआ का उपदग दिया है। व उनर उरणा क सबक वन फिर नी कभी जयरदम्ती स उहे जैन बनान का या जा विरोधा ममयकर उसपर जुहम डान का गिशा नहा दी ह।

सच्ची अहिंसा के बिना सच्चा धर्म नहीं मिलता

और

जहाँ अनेकानुशासन है वही सच्चा धर्म होता है। आचार्य हेमचन्द्राचार्य आचार्य हारविजयसूरि आदि महाराजाओं ने राजाओं द्वारा अहिंसा का प्रचार करवाया पर किसी मस्जिद या मंदिर नाशने के लिए प्रोत्साहन देने का काम जन साधन कभी नहीं किया। जन धर्म की नीति रचनात्मक एवं मङ्गलनात्मक ही रही है।

जन धर्म की कुछ मायनाओं की अथ धर्म का मायनाओं के साथ तुलना करने से जन धर्म की उदारता का स्वरूप स्पष्ट हो जाएगा।

य है उसकी उत्तरदायक च द नमन

- (१) किसी भी आत्मामें भाग का तीव्र अभिलाषा उत्पन्न होने पर वह एक निम्न अवस्थामें मोक्षमें पहुँचती।
- २) इस प्रकारकी भावना पैदा होने के लिए वह जन ही हो ऐसी कोई बात नग।
- ३) जनधर्मका दुश्मन बनने पर भी अगर उसमें मोक्षच्छा तीव्रतासे उत्पन्न हो गई तो अन्तमें वह भागमें जायेगा।

जिस भवमें (जिस शरीर में) वह मोक्षमें जानेवाला है उस भवम उसका जन कुलमें ही जन्म लेना चाहिए यह आप्रह भी नहीं है ।

जिस शरीरसे निकलकर वह मोक्षमें जानेवाला है उस शरीरमें उह जैनधर्मका कोई बड़ा गुण किया है या उसका विरोधी बना हो ऐसा भी सम्भवित है ।

जनधर्मको माननेवाला ही स्वर्गमें जायेगा और अन्य सब नरकमें जायेंगे ऐसी जनधर्मकी मायना नहीं है ।

जन मातापिताका पुत्र हो फिर भी उसका अयोग्य आचरण हो तो वह नरकमें जायगा और जैनकुलमें नहीं जन्मा हुआ कोई जैनधर्म का पालन तो क्या पर जैनधर्म के नाम से परिचित न होने पर भी स्वर्गमें जा सकता है ।

पर इतना तो सुनिश्चित है कि रागद्वेषमे मुक्त बना हुआ कोई भी जिसे कहलाता है और उनका बतलाया हुआ धर्म ही 'जनधर्म' है ।

जिस प्रकार नदीके द्वारा सभी झरने एक होकर समुद्रमें मिले उसी प्रकार एक हीनरागद्वेष के द्वारा ही सब मोक्षमें जाते हैं । इस प्रकार भोगद्वेष सागरसे मिल जानेवाली नदीका एक नाम 'जनधर्म' है । इसी उदारता

कारणसे जनधर्म व अनुष्ठापियोंमें या आचार्योंमें कभी धमाधमा सब कहे तो यह माहायता भी नहीं आई । जनधर्ममें यह आग्रह कभी नहीं है कि जो जनधर्मका पालन नहीं करता उस पर जुल्म डोआ-अत्याचार करो

पर

सबसे पहल अपने जीवनमें सपूर्ण रूपसे गति से जनधर्मका आचरण करो । फिर दूसरी को प्रेमभाव से सब करुणाभाव से सत्य ममझाओ । यह भी इस प्रकार कहकर नहा कि तू झूठा है पर इस प्रकार कहकर कि भाई तेरा मायतामें मैं बहुत इतना सुधार कर तुझसे बिबिध मत रखनवालाका झूठा है यह कहने की अपेक्षा उसका कुछ स्वीकार से जिससे तूरी सच्चाई प्रतीत होगी यही है स्याद्वादका सदेव ।

सरल भाषामें अगर कहना हो तो किसीका काना अपेक्षा ' भाई सपूर्ण देखनेके लिए दो आशोक तेजरी आवश्यकता है वसा कहना यही स्याद्वाद है ।

फिर भी जनधर्मियोंकी समस्या जनधर्मक उच्च तत्त्व त्याग समय पालनकी विरुद्धता व कारण इस जमानामें कम ही ता कोई आश्चर्य नहीं है । इसके लिए आचार्य विनावाजी के हाथ काफी है ।

‘जैनोमें दूसरे धर्मोंकी अपक्षा सभ्याका माह कम है। मगस लाग पूछने है कि आज जनियाकि सरया कम क्या ह ? म कहता हूँ कि कम गस्या बुद्धिमानीका निशाना है। सबवर मिठी है वह दुधमें घुलमिल जाती है ता अपना अस्तित्व ‘यापक बना देता है। सबवर पिगलन पर लाग कहत है ‘दुध मीठा है पर वास्तविक बात सो यह है कि वह सबवरकी मिठाग है। जन भी अयो में घुलमिलकर उनम धुपचाप मधुरता भर देते हैं। महाराष्ट्र में जब बालक का पाठशाला में भर्ती किया जाता है ता सबसे पहले उसे ‘श्री गणेशाय नमः’ सिखाया जाता था। वहाँ क बालक नहीं पर शिक्षक जैन थे इसलिए दूसरा पाठ ‘ॐ नमो सिद्धम्’ पढ़ाया जाता था। आज भी इसी प्रकार म लिखा जाता है।

आज जैन धम बहुत छाटा है (सभ्या की अपक्षा पर सबवर की तरह वह अपना अस्तित्व अया में ‘यापक कर अनश्वर रात से रहा है। मात्र सभ्या बढ़ाना भूल है गीण बात है।’

(विनावा भाव जन भारती वप-१५ अक-१६)



प्राचीनता

अनादिता

भारत देश जगती पुरानी सृष्टि के लिए दुनिया में परिचित है ।

भारत में भूतकाल में मतपुरुष दिव्यज्ञानी महारमा विराजते थे । नत-भविष्य-वतमान को हस्तामलकवत्त जान सकते थे । दुनिया के इतिहासकारा ने भी इस बातका समर्थन किया है । इसलिए भारत 'पुराना सा सोना' बह कर तसपद योग्य रखना है जो स्वभाविक ही है ।

जग धर्म भी पुराना है । तुम पुछाओ कितना पुराना ? इसका जवाब है इस दुनिया के जितना पुराना ।

शायद यह बात आपके समय में न आयेंगी । पर यह हकीकत है कि जग धर्म दुनिया के जितना ही पुराना है ।

यह बात कितने ही जिनेतर विद्वानों ने^१ स्वीकार ली है । विज्ञान इतना बढ़ा है फिर भी ज्ञान का विकास बहुत कम परिणाम में हुआ है जिससे इतिहासकारों ने दो काल खण्ड माने हैं ।

(१) ऐतिहासिक काल (२) प्राग् ऐतिहासिक काल

सब विद्वानों ने निःसंदिग्ध शब्दों में स्वीकार लिया है कि प्राग् ऐतिहासिक काल में जन धर्म का अस्तित्व था । कोई भी पूछ सकता है कि इसका सबूत क्या है ? किन प्रमाणा से आप प्रमाणित कर सकते हैं । कि जैन धर्म दुनिया का सबसे प्राचीन धर्म था ?

1 "It is impossible to know the beginning of Jainism"

Major General Forlong

जैन धर्म की आदि जानना असंभव है ।

Jainism began when this world began, I am of the opinion that Jainism is much older than vedas

Swami Ram Misharaji Shastri

Prof San Krit College,

Banares

"जबसे यह विश्वका प्रारंभ है तब से जन धर्म मिथ्यामान है । मैं तो मानता हूँ कि जैन धर्म वैदिक धर्म से भी प्राचीन है ।"

कारण ?

जुनिया के जितना हो वह प्राचीन है । उसने प्रथम स्यादर की बात कहना भी मरिचक है ।

भगवान महावीर भी जन धर्म के प्रथम^२ स्थापक न थे । वे तो मात्र जन धर्म के इन अवसरिणा के सबसे अन्तिम माने २४ वे तीर्थकर थे ।

भगवान महावीर ने यह कभी नहीं कहा था कि मैं इस नये धर्म का प्रस्थापन करता हूँ । उनके उपदेश में उन्होंने साफ तौर पर कहा दिया है कि मैं तो बहुत देर से रह रहा हूँ जो पुराने राज में अनन्त तीर्थकरों के द्वारा कहा हुआ है उसको ही गृह्यता है ।

2 Bhagwan Mahavir again taught Jainism Before him there were twenty-three (23) Teachers They also propagated Jainism From this the antiquity of Jainism is established

- Lokmanya Bal Gangadhar Tilak

भगवान महावीर ने जन धर्म का पुनः प्रचार किया गया था । उनके पूर्व भी २३ तीर्थकर हुए थे जिन्होंने भी जन धर्म का प्रचार किया था । हम सब जन धर्म को प्राचीनता प्रमाणित होता है ।

इस प्रकार जैन धर्म ग्रन्थों की दृष्टि से जैन धर्म का सबसे प्रथम स्थापक कोई भी नहीं है ।

तुम पुछोगे कि क्या ऋषभदेव तो पहले तीर्थंकर हैं न ?
नहीं, इस अवसरपिणी काल की दृष्टि से वे पहले तीर्थंकर हैं
अनन्तकाल की अपेक्षा से नहीं ।

कारण ?

न्होंने भा मही कहा कि 'अनन्त तीर्थंकरों ने जो कुछ कहा
उही मैं कहता हूँ । कुछ भी नया नहीं कहता ।'

इस प्रकार जैन धर्म का कोई भी तीर्थंकर यह नहीं कहता
कि मैंने नया धर्म कहा हूँ ।

अब सब धर्मों के संस्थापकों के नाम हम मिलते हैं । इन
संस्थापकों का नाम—सबसे पहले संस्थापकों ने—उनके ही धर्मग्रन्थों की
रचना की जिसने जगत का सबसे प्राचीन धर्म जैनधर्म है यह
स्वभाविकता से ही मिट्टा हुआ जाता है ।

पर,

अगर कोई प्रतियोग करे कि यह तो सब प्राक् ऐतिहासिक
काल की बात है इसलिए यह विश्वास के योग्य नहीं है ।
तीर्थंकरों ने कहा है कि हम जैनधर्म के प्रथम स्थापक नहीं

हमें तो जनघम दुनियाका सबसे प्राचीन धर्म है इसके लिए ऐतिहासिक प्रमाण की आवश्यकता है ।

आज उपलब्ध ग्रंथोमे प्राचीन से प्राचीन ग्रंथ हिंदु वेद माने जाते है । सब विद्वान वेदों को कमसे कम पांच हजार वर्ष पूर्व मानते है ।

अब आप कहेंग कि फिर तो हिंदुधर्म ही प्राचीन कहलायेगा क्योंकि उनका धर्म तो जनघम क ग्रंथोसे भी प्राचीन है ।

पर

भाई ! उन वेदों से ही जनघम प्राचीन प्रमाणित होता है कारण ?

वेदों मे भगवान ऋषभदेव भगवान अरिष्टनेमि आदि नाम आते हैं । केवल नाम ही नहीं उनके मंत्र भी हैं । इस स्वयं प्रमाणित हो जाता है कि वेद लिखाये गये उससे पहले जनघम का अस्तित्व था । जनघम क तीर्थकरों की दान तो उस समय भी मगहूर थी ।

वेदों में आनेवाले ये नाम आरप्यक श्रीमन् भागवत और पुराणों से भी समर्थित है उसमें जनघम क चौबीस तीर्थकरों का दान का स्विकार है । भगवान ऋषभदेव का चरित्र भी वा मिलता है ।

गनुश्रय गीरगार आदि जनों के परम पवित्र स्थानों का भी वहाँ उल्लेख है । वेदा में प्राण मनाने जनधर्म की प्राचीनता सिद्ध होती है ।

डा हमन जेकोबी, सवपल्ली ^१ राधाकृष्णन लोवमाय तिलक आदि भारतके और बाहरके विद्वानों ने भी यह प्रमाणित कर दिया है कि ' जैन धर्म प्राचीन धर्म है । '

वेनात ^२ परिव्राजकाचार्य ने भी माय किया है कि जैनधर्म यही प्राचीन धर्म है ।

माहन-जो-डेर के प्रसिद्ध शहर की मस्जिद पाँच हजार वर्ष पुरानी मानी जाती है उसमें से उपलब्ध योगमुद्रावाली प्लेट ^३

1 There is nothing wonderful in my saying that Jainism was in Existence long before vedas were composed

२ आज मैं आपके सामने स्विकार करता हूँ कि प्राचीन धर्म परमधर्म जो कोई सच धर्म होता वह जन धर्म है । जो बाने पुराणों में कहते हैं वे सच जन शास्त्रों से सख्त हैं । 'परमहंस परिव्राजकाचार्य स्वामी योगी जीयानंद'

गौर सील के (Seal) ऊपर लिखकर भी एक विद्वान न पड़े है ।

इस के उपरान्त माहून-जा-जरा का सभ्यता का मन्थ जितना जनधर्म से है उतना अन्य किसी सभ्यता से नहीं है । इस प्रकार भूतपूर्व शास्त्रिक द्वारा भी जनधर्म की प्राचीनता सिद्ध होता है ।

३ ईजिप्टने जगत् वर्ष पहले जा धर्म प्रचलित था वह भी जनधर्म के समान ही था यह बात विद्वान मान जा है ।

जबकि उपरान्त प्राचीन मूर्तिशिल्प रचना प्राचीन मूर्ति अगर का ही है तो वह साधवराजी ही है जो पटना के संग्रहालय में है ।

साक्षात् लिखित लिखित जनधर्म के पादान एतन्ना असंख्य है ।

प्राचीन गुफाएँ मूर्तियाँ आदि सब जनधर्म की प्राचीनता सिद्ध करने हैं ।



3 The religion of very ancient Predynastic Egypt, supposed to be lakhs of years old appears to be quite akin to Jainism

‘Robert Churchwell’

प्रसार

एक भूस्तरगास्त्रीय विद्वान ने एक स्थान पर लिखा है कि परतुम भारत के किमा भाग के उपर सात मील के व्यास के १२ म खुदाई करो ता कम म कम जैन संस्कृति का एक अवशेष मिले तुम्हें मित्रगा ।

मरे या तुम्हारे समान कोई यह बात बरे ता अतिशयोक्ति नकर हता म वह उदाई जाय पर जब भूस्तरगास्त्री विद्वानो बिचार से यन् अभिप्राय प्रकट होता है ता इमके भी कुछ खास कारण होत चाहिण ।

एक समय था कि जब जन धर्म फूलाफला था । भारतभर । यह प्रगुत धर्म था । भारतीय मत दर्पण नाम के पुस्तक में क समय जना की गल्पा ४० पन्नेड की बताई है ।

परदेगी प्रवासी ह्यू-एन गांग धीर इत्सिंग के द्वारा किये यन् केवा म जन धर्म के बिनाउ अवशेष तथा । वजन मिलता है ।

श्रेणिक उदायी चद्रपद्योत सप्रति रवालल, प्रियदर्शी अगाध,
चद्रगुप्त कुमारपाल आदि अनेक जन राजाओं ने जन धर्म का
प्रशसनीय प्रसार किया है ।

श्रेणिक राजाक समय में उनके महामंत्री अभयकुमारः
(आज के एठन) आर्द्रपुर के राजकुमार को विनिष्ट रीति से
जन धर्म बनाया था जो अंत में जन साधु बना ।

महान सम्राट सिकन्दर भारत विजय के बाद यहाँ के
संस्कृति अपने साथ ले जाना चाहता था । वह अपने साथ
जन साधु को ले गये थे जिस का वर्णन प्राक इतिहासकारों
लेख से उपलब्ध होता है ।

आज भी एथन्स में उस जन साधु की समाधि होने की
मान्यता प्रचलित है ।

बौद्ध धर्म के महावग पुराण के उल्लेख से प्रमाणित होता है
कि सिन्धु में भी जन धर्म का प्रसार था । वहाँ के राजाने जन
मुनि के लिए एक स्थानक बसवाया और श्रावस्ती के लिए मंदिर
बसवाया था ।

रोम के सम्राट् क्लॉडस में भगवान् पावनताय का भय प्रतिभा
है । पूछताछ से मालूम हुआ वह अमेनान नदी तट के विभी
शुका से प्राप्त हुई है ।

श्याद धम सस्यापक येशुक्रिस्त की जैन साधु से मुलाकात हुई था। इसका उल्लेख मिलता है। तिबेट में हिमगीरि का म प्राप्त एक ताडपत्रो पर इस घटना का उल्लेख पाया है।

इस प्रकार भारत की सीमा से दूर जन ससृति के अवशेष मिलने हैं। भारत ही नहीं बरिक् भारत के बाहर भी ऐसी धर्मिया मिलती हैं जिनपर जन ससृति की छाप है। अयाय कारणों से उनका धम परिवर्तन हुआ है फिर भी वे अपने परंपरागत मस्कार भूल नहीं पाते।

मगाल का मूठधम जैन धम था जिसे प्रयोधबद्रसेन नामक वेदवा ने प्रमाणित किया है और आज भी प्राचीन बंगाल की जंगली ही जानियों में जैन सम्कारों की शल्व दिखाई देती है।

इस प्रदेश में सराव नामकी जाति दिखाई देती है। विद्वानों ने प्रमाणित किया है कि 'सराव' शब्द 'श्राव' शब्दका अपभ्रंश है। प्राचीन काल में जन धर्म के लिए अहत्पम-श्रावधर्म

Some of the Jaina priest persauded him to accept Jain religion

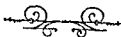
M C NOTOVICH
(Christ in India)।

निर्ग्रन्थ धर्म आदि दस्य अपिष प्रचलित थे । इसने सरास प्राचीन
जैन धर्म यह सिद्ध जाता है ।

ग्रीक देशकी आरम्भ ज्ञानि में जैन धर्म व आचार विचार
की अधिकता सिद्ध होती है । आरम्भ आर्युत गुरु का धर्म
रूप माना जाता है ।

दक्षिण भारत में लगभग सभा विधान धर्मों का जैन धर्म
यह बात मशहूर है । तमिलनाडु में (Madras State) की गुरु
कितने ही हिन्दु पक्ष व जिनका पूज्य जैन धर्म । मशहूर व निरुद्ध
मन्त्री भवनदत्तजी ने भी कहा है कि उनका मुख्य जैन धर्म था ।
उनकी जाति के सिवा अन्य जातियों में भी जैन धर्म का
आचरण पाया जाता है ।

आधुनिक में यमनी गोमटा गोम भी जाना जाता है ।
गोमटावर व (वाल्मीकी) भवन होने से ये गोमटी कहलाने और
उसका अपभ्रष्ट कोमटा बना । असाधारण व श्रीमहान्त गुरु भी
मशहूर से दूर है ये भी पहले जाना था ।



प्रभाव

इतिहास गाथी है कि सारी उन्नति अगति हानी ही रहती है। सभ्यता की दृष्टि में जनधर्म की भी कमी पड़ती है। फिर भी मनुष्य में जन धर्म का सहित, महति तथा शिल्प दिया है वह गौरवपूर्ण है।

दुनिया की सारी वस्तुएँ सदान महान धर्म मूल्य एव जनता की ही प्रति है। इस धर्म की शक्ति मर्यादा नहीं विनाश है। उस जनता का धर्म ही राष्ट्रिय धर्म और विज्ञान तथा भाषाओं का उगम जनधर्म होता है। वर्ष ६८ वर्ष में लिखा गया यह ग्रन्थ है जो भिन्न भिन्न २० भाषाओं में पढ़ा जा सकता है। सभी विद्वानों का मान्य है। आज उमर कुछ धर्म का समाप्त कार्य चल रहा है।

साहित्य भाषा का विनाश तथा उस विनाश के कारण मरि ही है। आज भी साहित्य के सभी विद्वान् यह धर्म भाषा का बहाल है। 'नित्यविचार' विचार

ए पाँच काव्यों में रचयिता जन मनि ही थे । 'नानल जसा तामिल
ना आम्हिरवरण भा जय सार का रचना है ।

कन्नड भाषा के निर्माण में तामिल भाषा के निमाण में भी
अधिक श्रेय जन सरकृति को प्राप्त है ।

कन्नड भाषा के आदि पाँच रत्न भी जय थे ।

कन्नड साहित्य के मूल जगता में जन साहित्य रचना द्वारा
विकसित बना है । हिन्दी राजस्थानी गुजराती उर्दू इत्यादि,
अंग्रेज जर्मन आदि भाषाओं में भी विपुल जन साहित्य मिलती
हुआ है । आज भी जन माधु एव रचना के द्वारा अविश्रुत साहित्य
संजन एव संचार जारी है ।

अद्यमानधी सरकृत प्राकृत भूतविमाना अपरान भाषाआये
जन साहित्य विपुल एव व्यापक है जो साहित्य का समग्र है। जान
मरना है । एक विद्वान का कथा है कि अगर सरजन साहित्यमें

1 The first poet of Kanada language is a jain The
redit for writing the recent and the best literary
work goes to the Jainas

Dr R R VARSHIA ACHARYA

मे जन नास्तित्य निकाल दिया जाय तो बेचारी सस्कृत कविता की क्या दशा होगी ?

एक साथ एम नहीं पर एक इगोण के सात सात अथ हो और प्रत्येक अथ से अलग अलग कथा निर्माण हो ऐसा अद्भूत 'सप्त सधान' काय जैनाचार्य की ही कृति है ।

मात्र एक ही पद " राजानो ददते सौम्यम " के आठ लाख अथ कर देनवाले ज्ञान मुनि है ।

इस प्रकार सस्कृत भाषा की अद्भूत एवं अनोखी उपासना कर सस्कृत भाषा का विश्व की महानभाषा का बिहद दिलानेवाले जैनाचार्य है ।

महान वैराग्यरग से रगने पर भी जन मुनिओं ने कामशास्त्र, संगातशास्त्र रत्न परीक्षा तथा ज्यातिष जैसे शास्त्रों को भी ज्ञान दृष्टि से पुष्टकर उसे समर्थ बनाया है ।



1 Now what would Sanskrit poetry be without the large Sanskrit literature of Jains

Dr HERTL

जैन कला

जैन साहित्य ने न केवल भारत व साहिब सभन में अपना सबसेमोखी प्रतिभा को बिकसित किया बल्कि उसने रयापत्य बला तथा चित्रकला से भी इस देश को विभूषित किया है। धर्म चरमकला का अंतिम निखर है यह यताने ने माना द्य दिशाओं में अनेरानेक गिल्फों की निर्मिता हुई।

प्राचीन स्तूप गुफाएँ मफामदिर तथा आर गिल्फा का सभन हुआ। बिहार की वारावर की आरिमा भुवन्दवर की, उदयगिरि—खडगिरि की हाथी गुफाएँ पदुकोगई की सितानवासल की गुफा हाल ही में नासिक र पाग प्राप्त २४०० वष गुरानी महाराष्ट्र गुफाए गुजरात में भीरनार तथा टाँक की गुफाए मथुरा व स्तूप इलोरा की गुफा मदिर अन ही नहि अपितु सम्पूर्ण भारत व इतिहास व मूर्तिमान मानम्नम्न है।

दक्षिण की मिटानवासी गुफा के दीवार चित्र तथा कल्पसूत्र उत्तराख्यपन आदि सुतहरे अक्षरों में लिखित शास्त्रों के चित्रों ने प्राचीन चित्र जगत में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है।

पूरे जगत् में ही नहीं पर गायद दुनिया में एक ही छोटी टकरी पर छोटे बड़े लगभग २५०० से ३००० मंदिरों का निमाण करनेवाला शत्रुजय का जगत्-गल्प सचमुच अभूतपूर्व ही है।

सगमरमर के सफेद पत्थरों में से दूध जैसी उज्ज्वल मीठी धारा भी संगीतधारा का प्रवाहित करनेवाला जन गिप्स ही है।

आज दलवाडा कुम्हारिया अचलगढ़ तथा राणवपुर की पत्थर की खुदाई भारत में ही नहीं अपितु दुनिया में भी गिप्सशास्त्र का अमोल खजाणा है।

कीमती रत्नों से लेकर मामूली रत्न से बनी हुई गालों नहीं बराबरी जिनमूर्तियों से भारत का विम्पित एवं मण्डित बननेवाला जैनधर्म ही है।

आज भी जन मंदिरों में सगात शिप चित्र और खुदाई के अमोल नमूनों का अपार सग्रह है।

अहिंसा अनेकात अपरिग्रह आदि व जैन मस्कृति ने वैदिक भारत में ही नहीं आचार विचार में अभूतपूर्व परिवर्तन लाये हैं

पशुवध तथा यनवध की शास्त्रवानों की इसी संस्कृति ने ही देवा दिया । आज उस प्रश्न को घम में अब कोई स्थान प्राप्त नहीं है ।

सत्यता हक सबने समझमें है यह दिव्यदृष्टि इसी संस्कृति का प्रभाव है । वस्तुनाश का एक ही दृष्टि से नहीं अनेक ही नहीं पर अमर्ष्य एवं अनन्य रीतिभा से विचारा जा सकता है इसलिये सत्य हमारा सापेक्ष होना है यह महामर्ष्य इसी संस्कृति की देन है ।

इस प्रकार मौलिक चिन्तन धारा की पूर्ति देन से जनधर्म ने मानव मान का उपरुन दिया है ।



एक कर्तव्य

जैन धर्म की भावना

भव्य इतिहास

मनोहर भूतकाल

उसकी विचारार्थ शिल्प

और

मनोरंजन

लक्ष्मी

उमड़ती है। तब तेरे या तेरे शासन के प्रति द्वेष तो पन ही
नस होगा ?

इस प्रकार उन्ने समान सिखमाहिथ के भूभक्तिक का
मनमयूर हथ से नय करता हा फिर हमारे नये सामाय जन का
हृथ अमीम हथ से मत बन जाय हमने अच्छय क्या है ?

पर पर पर

यही सीध इतना ही गाचा

यह

किसके प्रकाश मे ?

कितने प्रभाव मे ?

और

किसके पुष्पाय मे ?

सीधकर भगवत के वैजलज्ञान के प्रकाश से

नियम-न्याया नगद्वनधारिओ को पूनित आराधना से

शासन के लिये तन-मन-धन निष्ठावर करनेवाके उगारचरित
श्रावक ग्राविकाओ के पुष्पाय मे

इस गिरे सभ्या मोह छोडकर गानध्व का मोह रखो ।

प्रचार मोह छोडकर प्रभाव का ध्यान रखो ।

धन

और

उत्तमों भा महान जग धम के लिये प्रचार की नहीं आचरण
का आवश्यकता है ।

आचार आचार होगा

प्रचार आचार होगा (प्र + आचार)

तो

प्रचार अपने आप होगा ।

इस लिये आवश्यकता जैन बनाने की नहीं है पर

जन बनने की

जिन बनने की

जिनेश्वर बनने की है

एक बार जिनेश्वर बनने पर

सम्पूर्ण विश्व तुम्हारे चरणों पर झूकेगा ।

और

और यह बात प्रयोग ।



॥ श्री जिनेन्द्राय नमः ॥



हों हमें भी स्वीकार है.....!

यहाँ विश्व के गणनापात्र श्रेष्ठ विद्वानों के जन धर्म के विविध पहलुओं के विषय में अभिप्राय दिये हैं

लगभग सब व्यक्ति ख्यातनाम होने से उनका परिचय इस छोटीसी पुस्तिका में देना असंभव है । पर इनमें एक भी व्यक्ति अनजान नहीं है ।

दा तीन युरोपियन विद्वानों जन तत्त्वज्ञान में आवृष्ट होकर कम में जैन बने हैं । शायद सब अपने अपने धर्म का पालन करते हुए भी जिस प्रकार जन धर्म के विविध पहलुओं की महत्ता की स्वीकृति देते हैं यह बनानेका यहाँ प्रामाणिक प्रयास है ।

याचक जैन हैं या जनतर निमीव भी लिए यह आवश्यक नहीं सब अभिप्रायों का वापसा अपने सिर बाँधों पर चढ़ाये ।

पर

सत्य ता यह है कि उन विद्वानों ने
पुरुषार्थ से जैन तत्त्वज्ञान का अध्ययन किया

कर । अथ व अभिप्रायों व बातों में जिन मात्र से तुम सत्य के समीप नहीं पञ्च सकोगे ।

इस लिये इन सब अभिप्रायों का जिन मूचन समझकर तुम अपने अभिप्राय पर दृढ़ बना । अपना स्वयं अभिप्राय बनाओ ।



Jain has contributed to the world the sublime doctrine of Ahimsa. No other religion has emphasised the extent that Jainism has done. Jainism deserves to become the universal religion because of its Ahimsa doctrine.

जन धर्म ने दुनिया को उन्वगामी अहिंसा तन्त्रकी देन दी है । अथ किमा धर्म ने अहिंसा को आचार एवं विचार में जनधर्म व समान महत्व नहा दिया । जन धर्म अपने अहिंसा के तन्त्रज्ञान व कारण विन्वधर्म बना योग्य है ।

डा. राजद्वप्रसाद
भारत के प्रथम राष्ट्रपति



Lord Mahavira proclaimed in India that religion is a reality and not a mere social convention. It is really truth !

‘भारत में भगवान महावीरने उद्घाषणा की, कि धर्म मात्र सामानिक रुढ़ि नहीं वह वास्तविक सत्य है ।’

डा. रविन्द्रनाथ टागोर



‘मज्झिमा ।’

आप जाना है कि मैं धेवर वैष्णव संप्रदाय का आचार्य ही नहीं हूँ पर इन संप्रदाय का सब प्रकार से रक्षक हूँ । और इन संप्रदाय की ओर टेढ़ी नजर बरनवाले को भीधा बरनवाला भी हूँ फिर भी हम जाहिर मभा में मान्य के खातिर मुझे यह बहाना पड़ता है कि पापों का प्रथम समूह सारस्वत महासागर है ।’

स्वामी रामनिध नारसी, वाशी



Yes ' his religion (Jainas) is the only true one upon earth primitive faith of all mankind '

ना । जनधर्म ही विश्व का सत्य धर्म है । मानव जाति का सर्वप्रथम धर्म जन धर्म भी है ।

रेवरेंड ए जे डब्लोइस



In Jainism I find solution to the here to unsolved problem of existence I find plain answers to difficult questions which cannot be truthfully refuted and which sink in to and satisfy every corner of the brain and which if attacked by a searching criticism show up only still brilliantly

अब तक क अस्तित्व के उलझी हुई समस्या का समाधान म जन धर्म से पा सका है । कठिन समस्याओं क सरल उत्तर ऐसे ह कि जिसका प्रतिपाद कोई भी न कर सक । फिर भी जब उसका खण्डन किया जाता है तब उसका समाधान उज्ज्वल स्वरूप में बाहर आता ह ।

एछ वारन लणन

(वारन महोदय ने सात धर्मों का स्वीकार कर जन धर्म के जन धर्म का लणन में प्रचार किया ह ।)



वे (भगवान महावीर) एक अगाध सागर थ । निम्ने मानव प्रेम की तरंगे ही ऊँची उठती थी । बवल मानव ही क्यों जीवमात्र की बलाई के लिए उन्होंने सब कुछ निछावर कर दिया । '

महात्मा निवृत्त लालजी वमन एम ए
(अनेक पत्रों के सम्पादक तथा वनात कल्पद्रुम आदि अनेक ग्रंथों के लेखक)

ईश और द्वेष के कारण घम प्रचार में स्वावट लानेवाली
 वाधा आता रही फिर भी जन शासन कभी भी परामृत न हुआ
 बल्कि वह विजयी ही बना ।

श्री स्वामी विद्वान् बडियर वेदतीर्थ
 प्राप्ति सर मन्वृत कलिज इंदोर



“ The Jains are a veritable oasis in the desert of
 human strife and worldly ambition. It were a better
 world indeed if the world were Jain ”

भौतिक वामना और मानवाय यागनाश के इस रेखीनी
 भूमि में जन हरभर प्रशासक नैसा । अगर सम्पूर्ण विश्व जैन
 शासक नो गामुच यह विश्व जन हाता सा सचमुच यह विश्व
 अनिगुदर बन जाता ।

डा. मातामन कृष्णमणि
 ब्राह्मण शास्त्रिण्य पुनिर्वसिटी
 बम्बे नगर (यु. एम. ए.)



नम जननीलनने जन ग्रथो म आलक्षित परपरा की पुष्टि की ह । य नव मगाइन जन धम तथा उसरी अतिप्राचिनता के प्रमाण प्रस्तुत करते ह ।

मेजर जनरल फ्लॉग



All upper Western North Central Asia then say 1500 to 800 B C existed throughout India an ancient and highly organised religion philosophical ethical and severaly ascetical viz Jainism, out of which clearly developed the early ascetical features of Brahminism and Buddhism

और उस समय ईसास पूर्व १५ ० से ८०० सम्पूर्ण हिंदुस्तान में जति प्राचीन तथा मु यवस्मिन और दागनिक नतिक तथा पूण समयवका धम विद्यमान था । यह धम ही जनधम था । इसीके सहारे पारम्भिक बौद्ध तथा ब्राह्मण धम क साधुओं के नीति नियमों का विकास हुआ ।

डा इ थोमस

(गाट स्टडीस इन धी सायन्स ओफ कपरेटिव रिलीजियन)



जनिदा में २२ वे तीषकर नेमिनाथ ऐतिहासिक पुरुष माने जाते हैं। भगवद्गीता के परिशिष्ट में श्री बर्वेजी न स्वीकार किया है कि नेमिनाथ श्रीकृष्ण के चचेरे भाई थे। अगर जनों के २२ वे तीषकर नेमिनाथ कृष्ण के समकालिन थे तो सोय इक्कीस तीषकर की तब प्राचीन समय में विद्यमान होंगे इसका अनुमान साठक ही लगा ले।

डॉ. फुहरर
गणितशास्त्रिका इण्डिया बाल्युमर)
पृष्ठ १८



Jainism is completely different from Hinduism
and independent of it

जैनधर्म हिंदुधर्म से बिल्कुल भिन्न एवं स्वतंत्र धर्म है।

श्री कुमारस्वामी नासरी
मद्रास हाईकोर्ट के चिफ जस्टीस



जब हिंदुओं ने देखा कि जैनधर्म का असर उस मन को
प्रभावित करता है तब मग्न हिंदुओं ने सोचकर

'The Jain philosopher as I know is free from dogmatism. Frankly realistic and stands in close to other realistic school of thought. They have left for the posterity a full fledged philosophy which is indeed an valuable heirloom.

माहमद अब्दुल बहोदलान
डापरेक्टर आरु आर्कियालोजी (पृ ११) ए पी



गजराती भाषा के लाभणिक स्वरूप का आरम्भकाल (जन) आचार्य हमसूरी का समय स (१२२९) जात होता ह और गानिपूरि नाम के जन साधुन भरतेश्वर बाहुवडी राम' नामका वीर रस काव्य जि स १२४१ जमे प्राचीन काल में रचा या । प्राचीन गजराती न लेकर अब्बोचीन गजराती तक के पुराने जन कविषा कि कवम न एसा कमाउ बतलाई है कि उनकी परिच यात्मक सूचीके चार मुह्य ग्रन्थो के लगभग २००० स अधिक (जाऊन १० पेगी) पच्छ छे ह ।

श्री बेगवराव के गतस्त्री
गुजरात के प्रसिद्ध भाषागस्त्री



‘प्राचीन रुढ़िवादी हिन्दुधर्म के बड़े बड़े आचार्य आज तक यह भी नहीं जानते कि जना का स्याद्वाद किस चिडीया का ताम्र है।’

हिन्दी के सर्वोत्तम लेखक महावीर प्रसाद त्रिवेदी
(सरस्वती)



जबस मैंने छक्काचाय ने किया हुआ जन धर्म का मूढत पदा तबसे मुझे विश्वास हो गया कि इस सिद्धांत में कुछ है। जिसे वेदांत के आचार्य समझ नहीं पाये। आज तक मैं जैन धर्म के विषय में जितना जान पाया उससे मरौ यह दंड प्रस्ताति हुकी कि जैन धर्म के मूल ग्रंथ पढ़ने का इन्होंने बर्ण्ट लिया हाता तो जन धर्म का विरोध करने का उन्हें कोई अवसर ही नहीं मिलता।

महामहोपाध्याय गगनाय झा

(M A D L L)



I may say with conviction that the doctrine for which the name of Lord Mahavira is glorified nowadays is the doctrine of Ahimsa. If any practised it to the fullest extent and of Ahimsa, it was

मं उह हि जात न माघ कह मज्जा हू कि अहिमा न सिद्धांत
 न तारन भावाय म्हाभार न नाम न। मध्यमा प्रपञ्च हुई है।
 अगर विद्या नूत अहिमा का आवरण में लया हो या उत्तरा
 प्रचार दिया हो तो वह मध्यम मज्जायोर ही है।

महात्मा गोपी



उह के धर्म न वन्माम न ही इन्वार निय। या। उहने
 अहिमा का धाम न रमा। महाभारत एव प्रेमरूप धम ही
 अनिवार्य हि रमा है और मज्जा भारत में से पशुपद निरन्ध्र गया
 मज्जातक नमभाई (गुजरणी सागर)
 (सिद्धांत सार)



आम न दिग्मान धर्मों में अनधम एव ऐसा धम है कि
 निधम अहिमा ही प्रक्रिया सम्पूर्ण है। आत्मनयम में भी
 गुणधर्म के पन्थाय मज्जातक न लिये यह मूढमत्तर अहिमा
 विनिर्णय हुई और भा में गाराहार के रूप में यह बाह्यन जाति में
 भी अतमभूत बना कारण यह है कि अना - धमताओं ने आ
 तात्प्रियता प्राण का उगका अंतर दूडता न बडता ही गया।

एक अ। साहसारेर वो एम् हा
 (बहिष्ट रिष्ट)



य धम (अहिंसा) ब्राह्मण और जैन दोनों का है । जना न
 ने पूर्णता से जीवन में उतारा है ता ब्राह्मणों ने उसे धमभावना
 का रूप प्रदान किया है जिसे य जीवन का अंग न बना सके ।
 इस लिये यद् ब्राह्मणों का फज है कि उहा को जैनो के साथ
 मिलकर इस धम का पूण रूप से आचरण करना चाहिये ।

प्रा जान-बशकर बापूजी ध्रुव

M A L L B

(गुजरात के स्वातन्त्र्य विद्वान्)



‘ Such is the foundation of Jain religion and to
 its true followers no morality no religion is higher
 than the precept of Ahimsa therefore they can rightly
 take pride to be absolute believer in Universal Brother
 Hood of all living beings

जैनधम का मूलमूल सिद्धांत एक प्रकार है और उसका सबसे
 अनुयायी व अहिंसा मन्त्र से अधिक कोई महत्त्वपूर्ण नीति एक
 धम नहीं है और इस लिये जोधमान के अमूल्य का उनका दावा
 सत्य और उचित है ।



बौद्धधर्म को माननेवाले देशों में मांसाहारिमा की अधिकता अब भी जारी है । ये स्वयं तो हिंसा नहीं करते पर अन्य को द्वारा मारे गए बकरे आदि जीवा का मांस भक्षण करने में कोई निषेध नहीं मानते । यह था बौद्धों का अहिंसा नस्व जिसका जनों के द्वारा अस्वीकार किया गया ।

वासुदेव गोविन्द आपट बी ए



It is not correct to believe that Buddhism left some Hindu Castes like Brahmins Vaisyas etc. Vegetarian It was actually Jainism which achieved this in Andhra Buddhists eat even to oblige a devotee Jainas do not

यह कहना गलत है कि बौद्ध धर्म के प्रभावसे ब्राह्मण वश्य सभी हिंसनी ही जातियाँ शाकाहारों रह गई थी । सब तो यह है कि जनों के प्रभाव से यहाँ शाकाहार का प्रचार एवं प्रसार हुआ । बौद्धों अपने भक्तों के खातिर मांसाहार करते थे जब कि जना न खाता कदापि नहीं किया ।

एम गोपालकृष्ण मुनि
आ गोपाल गार्हमोहट ट्रनिंग कॉलेज नलोर



Many people might be led to Jainism through Buddhism. It is a stage before Jainism. The matter of knowledge obscuring karmas is important in this context. The Buddhists are on right path. If they remove the knowledge obscuring karmas by holy acts they will see truth of Jainism in short time.

Jainism was first Buddhism lane from it. If we wish to have right understuding of Buddhas of Mahatma Jesus we must be grounded in Jainism.

‘बहुतसे लोग बौद्ध धर्म के द्वारा लाया जा सकता है। बौद्ध धर्म प्रथम भावी है इसमें ज्ञान का आवत करनेवाला ज्ञानावरणीय कम महत्वपूर्ण है। बौद्ध सत्य है अगर व पवित्र प्रवृत्ति के द्वारा ज्ञानावरणीय कम का नाश करेगा तो जैन धर्म का सत्य सद समय में ही के समय पायेगा। जैन धर्म पहले था और बौद्ध धर्म उससे ही पैदा हुआ अगर हम बौद्ध या ईसा का ठीक ठीक में समझना चाहते हैं तो जैन धर्म ही उसकी नींव होनी चाहिए।

मि. श्री एल. जैन

इसमें काठेन वास्तेन

(५ आचार्यदेव विष्णुसूरीश्वरजी महाराज साहेब के साथ पत्रोत्तर में उद्धान यह बात स्पष्ट की है)



The Jaina Sadhu leads a life which is praised by all. His practise, Vratas and rites strictly shows to the world the way one has to go in order to realise the soul, the Ahimsa. Even the life of a Jain householder is so faultless that India should be proud of him.

“जन साधु जीवन की सब प्रशंसा करते हैं। जन साधुओं ने अपने व्रत तथा नियमों का दृढ़ता से पालन कर जगत् का अन्धकार का प्रतापि का सामना बतलाया है। अर ! जन गृहस्थ का जीवन भी ऐसा निर्दोष रहता है कि जिस पर भारत का गौरव रक्षना चाहिए।”

डा० मनियचन्द्र विद्याभूषण



वेद एव पुराणो मे जैन तीर्थकरों की स्तुति

जैन विभाग में वेद महाज्ञान भागवत तथा पुराणों में जन धर्म का प्राचिनता को प्रमाणित करनेवाले अवनर्गों का संग्रह है । इसमें यह स्पष्ट होगा प्राचीन या प्राचीन काल में भी जन धर्म का स्वरूप क्या था । विद्यमान या निर्विद्यमान अस्तित्व साहित्य में भी उम्मा नाम गोरव का भाव उल्लिखित किया गया था । अथा ऐसाकित शब्दों पर ध्यान निजिये ।

ॐ नमो प्रपञ्चा

मन्त्रवेद

ॐ एतद्विष्णुमि स्वाहा

मन्त्रवेद

ॐ बलाक्य प्रतिष्ठितानां अनुविमर्ति तीर्थकराणां प्रपञ्चादि
वर्धमानास्तानां सिद्धानां कारण प्रपञ्च ' मन्त्रवेद

ॐ पवित्र नाममुपवि (ई) प्रसामह येनां नामा (नमन) जाति
येनां मोरा ' मन्त्रवेद

ॐ नाम गुपीर निवासस ब्रह्मगम सनातन उपमि वीर
पुरुषमहत्तमादिर्यवण तमस पुरुस्ताप स्वाहा ' मन्त्रवेद

‘अहन् विभर्षि सायवानि, घ वाहन् निष्क यजन विश्वम्प
अहन्निदधम विश्व भवभुव’ ऋग्वेद

ॐ नमो अहता ऋषभो ॐ ऋषभ पवित्र पुरहृतमध्वर यज्ञेषु
नमः परम माहसन्तुत पर ऋषभ त पगुरिद्र माहुरिति स्वाहा ।
ॐ ज्ञानामिद्र वृषभ वदति अमतारमिद्र हवे मुमत
मुपाश्वमिद्रमाहुरिति स्वा” ऋग्वेद

‘आतिथ्यम्प भासर महावारस्य नमः ॥
रुषामुपासदामेत निधौ रात्रौ सुरासुत ।” ऋग्वेद

‘स्वस्ति न साध्या अरिष्टनमि स्वस्ति ना बहस्पतिदधातु’ ऋग्वेद
‘तरणि सिधासति वाज पुर ध्या युजाभावद् पुरन्त नमा गिरा
नेमि तष्टव गृद्ध ।” ऋग्वेद

दीर्घायु युवलायुर्वा शुभजायु ॐ रक्ष रक्ष अरिष्टनमि स्वाहा ।”

वामदेव शान्त्यधमनुरिधीयते सास्माक अरिष्टनमि स्वाहा ।”

‘अजित जिनद्र तदवधमान पुरहृतमिद्र स्वाहा । दधतु
दीर्घायुस्तत्वाय बलायवचसे सुप्रजाम्त्वाय रक्ष रक्ष अरिष्टनमि
स्वाहा’

क्रयभ एव भगवान् ब्रम्हा भगवता ब्रम्हणा स्वयमया श्रीणानि
ब्रह्माणि तदासि च प्राप्त पर पदम् । आरण्यके

दशयन् धरमधीराण मुरागुर-नमस्तुत ।
नीतिप्रयवर्ता यो, यगा १ प्रथमा जित ॥

स्मृति
निवपुराण

शृगभाः भारती जग धीरपुत्रगताग्रज ।

राये अभिविध्य भरत महाशक्त्यामाश्रित ॥ ब्रम्हाड पुराण

परमात्मानमात्मान लसत कवल निमलम् ।

निरजन निराकार प्रथमन्तु महापिम ॥ स्वयं पुराण

पधासनसमासीन दमामधूनि निगदर ।

नमिनाय सिद्धाय, मामधकस्य दामन ॥ प्रभास पुराण

सवज सवदर्पाच सवदेव नमस्तुत ।

छत्रयोभिराभूयो मुक्तिमागमसौवन् ॥ निवपुराण

कलास विमल रम्य शृषमोप जिनेवर ।

धकार स्वावतार यो सव सवगता निव ॥ निवपुराण

अष्टपट्टिपु तीर्थेषु यात्रायां यत्फल भवेन ।

आदिनायस्य देवस्य, स्मरणनापि तद्भवेन ॥ नागपुराण



(२३)

पुराणों में जैन तीर्थ वर्णन

रवताद्वी जिना नमि युगानि विमलाचले ।

अग्निषामाश्रमादेव, मुक्तिमागस्य वारणम ॥

महाभारत

वामनन रघत, श्रीनमिनाषाग्रे ।

बलिबन्धन मामध्यायं तपस्तपे ॥

वामनावतार



॥ अथ सारम्भः ॥

॥ श्री विष्णुदेव ॥

॥ श्री आर्यभट्टः ॥

श्री सम्मोदितरजो महार्ताय यात्रा अनुमोदना ममिति

वार्त्तावली- सुप्रसन्न जन मणि

१२ महार्ता गीता रात्रि विष्णुदेव

प्रमुख

माणिक्यदेवी विलास

मन्त्र

उप प्रमुख

सम्मोदितरजो विलास

विलास २,

सेनपतिदेवी वी विलासिमा, १२

विलास

मन्त्र

रात्रिदेवी वी विलास

विष्णुदेव

गुरु मन्त्र

सुप्रसन्न

मन्त्र

श्री विष्णु मन्त्र

विलास मन्त्र विलास मन्त्र

विलास

विलास भाई विलास भाई

अहमन्त्र

विलास २

विलास मन्त्र विलास

विलास

